eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 01, April 2025

ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्ति में बालिकाओं के समक्ष समस्याएं

निरूपमा सिंह[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभान, राजकीय महाविद्यालय, जहाँगीराबाद (बुलन्दशहर)

Received: 05 April 2025, Accepted: 20 April 2025, Published online: 30 April 2025

Abstract

शिक्षा मनुष्य का आभूषण होती है, जो मानव के व्यक्तित्व को ओर भी ज्यादा सुन्दर बनाती है। परन्तु शिक्षा जैसे आभषूण को प्राप्त करने में ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को अनेक परेशानियाँ प्रारम्भ से ही झेलनी पड़ती है। इस शोध पत्र में उच्च शिक्षा विशेषतः स्नातक स्तर की शिक्षा तक पहुँचने तथा उसे निरन्तर प्राप्त करते रहने में ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं को कौन–कौन सी समस्याओं से दो–चार रोज ही होना होता है, को बताने का प्रयास किया गया है। यह एक अवलोकनात्मक शोध लेख है।

मुख्य शब्द– ग्रामीण क्षेत्र, बालिकाऐं, उच्च शिक्षा, स्नातक गांव

Introduction

भारत में ग्रामीण क्षेत्र सुविधाओं के अभावों के लिए भी पहचान रखते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों व शहरी फक्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से बहुत ज्यादा अन्तर मिलते हैं। गांवों में सड़कों के अभाव के साथ यातायात के समुचित साधनों का भी अभाव होता हैं। बालिकाओं के सन्दर्भ में इन अभावों पर दृष्टिपात करें तो रास्ते सुनसान होते हैं, बालिकाओं की पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण न के बराबर होता है जिसके कारण उनके प्रकार की पारिवारिक, सामाजिक समस्याओं से जुझते हुए ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाऐं स्कूल और फिर कॉलेज तक पहुँच पाती हैं।

यह शोध पत्र 7 वर्षों के ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के साथ हुए अनुभवों व अवलोकन पर आधारित है। उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के ब्लॉक जहाँगीराबाद के कॉलेजों में विशेषतः स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रही छात्राओं को नित सामने आ रही परेशानियों को इसमें साझा किया गया है।

2011 के जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में कुल साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत थी तथा बुलन्दशहर जिले की औसत साक्षरता दर 68.88 प्रतिशत थी जिसमें शहरी क्षेत्र की औसत साक्षरता 69.39 प्रतिशत तथा गामीण क्षेत्र में 68.71 प्रतिशत थी, यहाँ पर लिंगानुपात के अनुसार ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की तुलना करें तो शहरी क्षेत्र में पुरूष की साक्षरता दर 77.39 प्रतिशत व महिलाओं की 60.65 थी जबकि शोध पत्र के लिए उल्लेखनीय बिन्दु ग्रामीण क्षेत्र की साक्षरता दर पुरुष 82.10 प्रतिशत, महिला 53.85 प्रतिशत है।

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि महिलाओं में साक्षरता दर पुरुषों के मुकाबले सामान्यतः कम ही होती है परन्तु इसका अन्तर गामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों के मुकाबले बहुत ज्यादा बढ़ कर, महिलाओं की साक्षरता दर को और भी ज्यादा कम हो जाता है। यह विचारणीय प्रश्न है कि बुलन्दशहर के ग्रामीण क्षेत्र में 2011 की जनगणनानुसार पुरुष साक्षरता दर शहरी क्षेत्र से ज्यादा रही परन्तु वहीं पर महिलाओं की साक्षरता दर शहरी महिलाओं व पुरुषों की अपेक्षा 53.85 प्रतिशत ही थी, ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में अर्थात् गांव में मौजद होती है जो बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने से विशेषतः उच्च शिक्षा प्राप्त करने से रोकती है। अवलोकन करते हुए निम्न प्रकार की परिस्थितियों की उपस्थितियों की मौजूदगी प्राप्त होती है,

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 01, April 2025

जिनके कारण ग्रांव में या कस्बों में रहने वाली बालिकाऐं उच्च शिक्षा तक अपनी पहुँच नहीं बना पाती हैं, ये हैं–

घर से महाविद्यालय का दूर स्थित होना– शोध पत्र में अनूपशहन तहसील, जहाँगीराबाद ब्लॉक, स्याना तहसील के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित महाविद्यालयों की स्थिति के विषय में दूरी को बताया जा रहा है, यहाँ औसतन घर से महाविद्यालय 3 से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। 1 से 3 कि0मी0 की दूरी पर रहने वाली बालिकाओं की संख्या बहुत ज्यादा नहीं होती है। अधिकांश बालिकाऐं खेतों के बीच बने रास्ते पर पैदल चलकर ही ये दूरी पार करती हैं। अतः निरन्तर कॉलेज आने की स्थिति नहीं बन पाती है। तथा जो बालिकाऐं उससे ज्यादा दूर रहती हैं, दूरी के कारण आने–जाने की व्यवस्था सदैव नहीं कर पाती है तथा परिवार से भी किसी न किसी कारणवश मदद नहीं मिल पाती है। हर वर्ष इस कारण से कॉलेज छोड़ने वाली बालिकाऐं मिल ही जाती है जबकि लड़कों के लिए यह कोई बड़ी समस्या नहीं है। कम से कम कॉलेज छोड़ने के लिए तो बिल्कुल नहीं। इस क्षेत्र के कुछ नए खुले कॉलेजों द्वारा यातायात की सुविधा के लिए बसों की सुविधाऐं छात्र–छात्राओं जाने लगी हैं, जो एक अच्छा प्रयास है, परन्तु निजी विद्यालयों की फीस सरकारी विद्यालय की अपेक्षा काफी ज्यादा होती है तो कम परिवार ही इस सुविधा का उपभोग कर पाते हैं।

यातायात के साधनों का अभाव तथा रास्तों का सुनसान होना– ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों की स्थिति में सुधार हो रहा है परन्तु इन सड़ाकों पर यातायात के समुचित साधनों का अभाव सदैव रहा है। प्राइवेट बसे चलती है जिसके लिए सभी पढ़ने वाले बच्चों के साथ ही उच्च शिक्षा के लिए पढ़ने वाली बालिकाऐं एक से डेढ़ घण्टे का इन्तजार करती हैं, अन्यथा पैदल भी चल कर जाती हैं। यह महाविद्यालय जाने के लिए हतोत्साहित करने वाली स्थिति बन जाती है।

इसके अतिरिक्त ये बस या ई–रिक्शा मुख्य सड़क पर ही चलते हैं। गांव के सम्पर्क रास्तों पर ये नहीं जाते हैं, यदि जाते हैं तो किराया भी ज्यादा लेते हैं और रोज ज्यादा किराया देकर या पैदल दूरी पार कर महाविद्यालय आना मुश्किल होता है। गांव के ये सम्पर्क रास्ते दोपहर के समय में बिल्कुल सुनसान होते हैं, रास्तों पर दोनों तरफ बबूल होता है या ईख के खेत या अन्य कोई और फसल वाले खेत भी होते हैं। इन रास्तों पर दोपहर के समय जब ये बालिकाऐं घर के लिए जाती हैं तो बिल्कुल सुनसान होते हैं। सांय–सांय की आवाजें आती हैं, काफी डरावना लगता है। अतः अभिभावक भी सुरक्षा व असुविधाओं की दृष्टि से बालिकाओं को रोज महाविद्यालय नहीं जाने देते हैं।

आर्थिक समस्यायें– घर में यदि कोई आर्थिक परेशानी पैदा होती है और पैसों की कमी से परिवार जूझ रहा होता है तो परिवार के सभी सदस्य मिलकर इसे दूर करने के लिए अपने–अपने स्तर पर काम करते हैं, इस स्थिति में इनकी परीक्षा शुल्क समय पर जमा नहीं हो पाता है, तब परिवार के द्वारा लड़कों की पढ़ाई को ही जारी रखा जाता है और लड़कियाँ पढ़ाई जारी नहीं रख पाती हैं।

भारत में यह सामान्य नियम है कि परिवार में कुछ भी आर्थिक परेशानी हो और परिवार के बच्चों में से किसी एक की शिक्षा छुड़वाने का विकल्प बने तो ये विकल्प सदैव लड़कियाँ ही पूरा करती हैं। बहुत कम लड़कियाँ ही पुनः अपनी शिक्षा शुरू कर पाती हैं परन्तु पुनः पढ़ाई शुरू करने वाले यह उदाहरण मिले अवश्य ही है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 01, April 2025

घरेलू काम की जिम्मेदारी– ग्रामीण क्षेत्र में बालिकाओं के ऊपर उनके घर के कामों अर्थात् घर की रोजाना की साफ–सफाई, खाना बनाना, बर्तन साफ करना, जानवरों को चारा देना, गोबर की सफाई इत्यादि कामों को प्रतिदिन करना होता है। सुबह के समय जब सभी काम पूरे हो जाये तभी वे कॉलेज जाने के लिए समय निकाल पाती हैं। इन परिस्थितियों में से बालिकायें कम ही कॉलेज आती हैं; ऐसी स्थिति के कारण वे बीच में भी पढ़ाई छोड़ देती हैं या पढ़ाई जारी नहीं रख पाती हैं। गांवों में सबसे ज्यादा उदाहरण इसके मिलते हैं, ऐसे में ये बालिकाऐं खुद भी पढ़ाई के प्रति बहुत ज्यादा लगाव नहीं रख पाती हैं।

शादी हो जाना– ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की शादी 12वीं पास करते–करते या उसके 1 अथवा 2 साल में अधिकांशतः हो ही जाती है। ऐसे में यदि ससुराल दूर होती है तो निश्चित ही इन बालिकाओं की पढ़ाई बन्द हो जाती है। बहुत कम लड़कियाँ ही शादी के बाद अपनी पढ़ाई पूरी कर पाती हैं। जहाँ पढ़ाई छोड़ने के उदाहरण बहुत सारे हैं, वहीं पर अब शादी के बाद भी ससुराल व मायके पक्ष पढ़ाई पूरी करा रहे हैं, ऐसे भी कई उदाहरण सामने आ रहे हैं। यह एक सकारात्मक पहल हैं। परन्तु ये बच्चियाँ केवल परीक्षा के लिए और अन्य आवश्यक कार्य के लिए महाविद्यालय आ पाती हैं।

अन्य कारण– ग्रामीण क्षेत्र में रूढ़िवादी विचारों का प्रभाव ज्यादा होता है। इस वजह से भी ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को अनेक प्रकार की सामाजिक व पारिवारिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और उनकी पढ़ाई छोड़ने का एक कारण भी बन जाता है। जैसे लड़कियाँ घर से दूर और लगातार महाविद्यालय जाती है, अभिभावकों को उनके बिगड़ने या किसी लड़के के चक्कर में पड़ने का भय बना रहता है, इसी भय के कारण अधिकतर लड़कियों की शादी 18 वर्ष तक या उससे पूर्व ही गांवों में कर दी जाती हैं। ऐसे में उच्च शिक्षा में रूकावट होती है जिसका हल ये बालिकाऐं पढ़ाई छोड़कर ही कर पाती हैं।

माता–पिता भी लड़कियों को ज्यादा पढ़ाना नहीं चाहते हैं, पढ़ते–पढ़ते शादी हो जाये ये ही काफी समझते हैं। शादी के बाद पढ़ते रहने के लिए इन बच्चियों को अपने माता–पिता और ससुराल पक्ष को काफी मनाना पड़ता है, बहुत कम उदाहरण मिलते हैं जो शादी के बाद भी लड़कियों की पढ़ाई पूरी करायें।

एक तरह से उच्च शिक्षा ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाऐं प्राप्त कर सकें, ये वातावरण ही नहीं होता है। इसके अतिरिक्त जब ये बालिकाऐं घर से बाहर महाविद्यालय जाने लगती हैं तो कुछ एक उदाहरण उनके गलत संगत में पढ़ कर, माता–पिता की मर्जी के बिना अपना जीवन साथी चुनकर स्वयं शादी भी कर लेती है, जिसमें कारण घर की अन्य बच्चियों को भी पढ़ाई से रोक दिया जाता है तथा गांव में भी ये बालिकाऐं उदाहरण बन जाती हैं स्वतन्त्रता का गलत उपयोग करने का। उच्च शिक्षा को पाने के लिए बालिकाओं को अनेक समस्याओं का सामना करते हुए संघर्ष करना पड़ता है और ग्रामीण बालिकायें स्वयं की उच्च शिक्षा के प्रति बहुत जागरूक नहीं होती हैं। ये भी कह सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की उच्च के लिए वातावरण नहीं होता है।

निष्कर्ष– ग्रामीण बालिकाऐं पढ़ अवश्य रही हैं, वे माध्यमिक स्तर तक अपनी पढ़ाई पूरी कर लेती है परन्तु उच्च शिक्षा की पढ़ाई बीच में अधिकतर ग्रामीण बालिकाओं की छूट जाती है। ये बालिकायें अपनी उच्च शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं होती है, उन्हें पढ़ाई के लिए वातावरण नहीं मिलता है। अतः पढ़ाई रोके जाने या छूट जाने पर बहुत प्रतिरोध ये नहीं करती हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 01, April 2025

इसके अतिरिक्त पिछले 2–3 वर्षों में उच्च शिक्षा में पंजीकरण की औसत दर कम ही हुई है। जिसका प्रभाव ग्रामीण बालिकाओं पर भी पड़ा है, परन्तु उ0प्र0 सरकार अनेक प्रयासों के माध्यम से उच्च शिक्षा में पंजीकरण पुनः बढ़ा रही है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में जिस दर से ग्रामीण बालिकायें पंजीकरण कराती है, उसी दर से वे उच्च शिक्षा की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती हैं। इसके लिए अनेक कारण भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद हैं परन्तु उन्हें कम किया जा सकता है यदि पूर्ण खत्म ना कर सके। भारत के समुचित विकास के लिए ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को उच्च शिक्षा अनविार्य है।

संदर्भ सूची–

1. बुलन्दशहर (बुलंदशहर) जिला जनसंख्या जनगणना 2011–2021–2025, उत्तर... https://www.census2011.co.in
2. उत्तर प्रदेश में साक्षरता में लैंगिक असमानता : एक स्थानिक विश्लेषण, Nature https://www.nature.com
3. डेढ़ दर्जन राज्यों में उच्च शिक्षा में महिला नामांकन दर राष्ट्रीय औसत से कम (03 अप्रैल 2023) https://www.livehindustan.com
4. उच्च शिक्षा में महिलाओं की स्थिति – Drishti IAS नि0 2019, https://www.drishtiias.com